चित्रकला (332)
उच्चतर माध्यमिक स्तर
पाठ्यक्रम

आधार

चित्रकला कला का एक रूप है। यह आत्माभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम होने के साथ-साथ आत्मिक संतोष और उपलब्धि का स्रोत भी है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को व्यावहारिक कार्य और कौशल के लिए आवश्यक सूचनाएँ प्रदान करना और सैद्धांतिक पहलुओं से परिचित करना है जो भारत और पश्चिमी दुनिया में युगों से प्रचलित हैं। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को उनकी सौंदर्य-संवेदनशीलता और सराहना करने की क्षमता को बढ़ाने में मदद करेगा। आशा है कि यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों में सुंदरता की खोज करने, इसे व्यक्तित्व में समाहित करने और दृश्य-प्रस्तुति देने के लिए व्यावहारिक क्षमताओं को विकसित करेगा। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को किसी भी सांस्कृतिक विरासत और आस-पास के वातावरण के प्रति अधिक संवेदनशील बनाएगा और दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करेगा।

उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य हैं :

- चित्रकला का ज्ञान और उसकी समझ का विकास;
- एक सौंदर्यपरक दृष्टिकोण का विकास;
- विभिन्न रंगों और उनके सामंजस्य के साथ काम करना जिनमें रेखांकन और चित्रकला की विविध सामग्री होती है; जैसे- पेंसिल, पेस्टल, जल रंग और तेल रंग, स्याही और स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री, मिश्रित मीडिया और डिजिटल कला।
- ड्राइंग और पेंटिंग के कलात्मक कौशल को बढ़ा सकेंगे; सामान्य रूप से सौंदर्यपरक दृष्टिकोण का विकास और विशिष्ट रूप से कला की सराहना।
- ड्राइंग में कलात्मक कौशल और चित्रकला शिक्षार्थियों की सौंदर्य संबंधी संवेदनशीलता बढ़ाएं।
- चित्रकला की रचना के विभिन्न पहलुओं, उसकी रचना, लय, बनावट, तान के रूपों, रेखाओं और रंगों की अभिव्यंजना-शक्ति की समझ।
- सिंधु घाटी सभ्यता से आरंभ होनेवाली मौर्य से गुप्त काल, मंदिर कला, मूर्तिकला और इंडो इस्लामिक वास्तुकला के विभिनन चरणों में निर्मित कला और शिल्प के क्षेत्र में विकास का ज्ञान और उसकी समझ।
- मुगल, राजस्थानी, पहाड़ी, दक्कन और कंपनी-स्कूल जैसे चित्रकला के विभिन्न स्कूलों के उद्भव और समकालीन कला आंदोलनों के अग्रदूतों के साथ साथ लोकचित्रों की विशेषताओं का ज्ञान और समझ।

पाठ्यक्रम की संरचना

उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए चित्रकला पाठ्यक्रम को दो भागों विभाजित किया गया है- सिद्धांत और प्रयोगात्मक।

1. **सिद्धांत**

- **मॉड्यूल 1:** भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला की ऐतिहासिक सराहना
- **मॉड्यूल 2:** भारतीय समकालीन और लघु चित्रकला की ऐतिहासिक सराहना
- **मॉड्यूल 3:** रेखांकन और चित्रकला में उपयोग की जाने वाली विधि और सामग्री
- **मॉड्यूल 4:** भारत में आदिवासी और लोक कला

2. **प्रयोगात्मक**

- **मॉड्यूल 1:** प्रकृति और वस्तु का अध्ययन
- **मॉड्यूल 2:** विभिन्न संरचना, पोस्टर और बनावट का निर्माण
- **मॉड्यूल 3:** कोलाज, ग्राफिक्स और विभिन्न कला रूपों का निर्माण

प्रत्येक मॉड्यूल के लिए न्यूनतम अध्ययन-घंटे और अंक आबंटित किए गए

क्र.सं.	मॉड्यूल के अनुसार वितरण	न्यूनतम अध्ययन घंटे	अंक
	सिद्धांत	**70**	**40**
1.	भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला की ऐतिहासिक सराहना	20	12
2.	भारतीय समकालीन और लघु चित्रकला की ऐतिहासिक सराहना	20	14
3.	रेखांकन और चित्रकला में उपयोग की जाने वाली विधि और सामग्री	20	8
4.	भारत में आदिवासी और लोक कला	10	6
	प्रयोगात्मक	**170**	**60**
5.	प्रकृति और वस्तु का अध्ययन	60	20
6.	विभिन्न संरचना, पोस्टर और बनावट का निर्माण	60	20
7.	कोलाज, ग्राफिक्स और विभिन्न कला रूपों का निर्माण	30	10
8.	पोर्टफोलियो प्रस्तुति (गृह कार्य)	20	10
	कुल	**240**	**100**

पाठ्यक्रम का विवरण

सिद्धांत **40 अंक**

मॉड्यूल 1: भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला की ऐतिहासिक सराहना 12 अंक

प्रस्तावना

सिंधुघाटी-सभ्यता से संबंधित कला और मूर्तिकला भारत की एक महान परंपरा का एकमात्र उपलब्ध प्रारंभिक प्रमाण है। इन कला एवं मूर्तिकला-संबंधी कार्यों के माध्यम से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि भारतीय कला की परंपरा बहुत पहले शुरू हो गई थी। राजनीति और धर्मों की बदलती स्थितियाँ 16वीं सदी ईसवी तक भारतीय कला को प्रेरित करती रही। परंतु कला के क्षेत्र में सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर मौर्य काल तक की अवधि के बीच लगभग 1000 वर्षों के विवरण प्राप्त नहीं हैं।

भारत की वास्तुकला और मूर्तिकला कई शताब्दियों के मध्य विकसित हुई है और यह मध्यकाल के दौरान अपने सबसे शानदार चरणों में मिलती है। इस अवधि में भारतीय मूर्तिकला ज़्यादातर मंदिर-अलंकरण के लिए थी और ये मंदिर अपनी सादगी, स्मारकीयता और राजसी छवियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

पाठ 1: भारत की प्रागैतिहासिक चित्रकला

विषय

- मिर्ज़ापुर के शैलचित्र
- पंचमढ़ी के शैलचित्र
- भीमबेटका के शैलचित्र

पाठ 2: सिंधुघाटी-सभ्यता की चित्रकला

विषय

- सिंधुकालीन बर्तनों पर पशु-आकृतियाँ
- हड़प्पा के बर्तन-भंडारण-मर्तबान
- हड़प्पा मिट्टी के बर्तन चौड़े मुँहवाला कटोरा
- सिंधुघाटी-सभ्यता के बर्तनों पर ज्यामितीय मछली (मोटिफ़) चित्रित बर्तन
- घाटी बर्तनों पर पक्षी आकृतियां
- हड़प्पा मिट्टी के बर्तन चौड़े मुँहवाला कटोरा

पाठ 3: अजंता एवं उत्तर-अजंता चित्रकला

विषय

- बोधिसत्व अवलोकितेश्वर
- अप्सरा
- छत की सजावट
- बाघ गुफा

पाठ 4: सिंधुघाटी-सभ्यता की मूर्तिकला

विषय

- योगी आवक्ष
- नर्तकी
- मातृदेवी

पाठ 5: मौर्य एवं उत्तर-मौर्यकला

विषय

- चवंरधारिणी यक्षिणी
- हाथ में पिंजरा लिए यक्षिणी
- बुद्धकी खड़ी प्रतिमा

मॉड्यूल 2: भारतीय समकालीन और लघु चित्रकला की ऐतिहासिक सराहना 14 अंक

प्रस्तावना

हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध और जैन शासकों के संरक्षण में भारतीय कला 16वी. सदी तक विकसित हुई। कला-आंदोलन का एक नया युग शुरू हुआ जब मुग़ल भारत के शासक बने।

इस संदर्भ में भारत की सिंधुघाटी–सभ्यताका स्वर्णिम अध्याय माना जाता है। इस समय में कला के अनेक रूप दिखाई देते हैं, जिनमें मूर्तियाँ, मुहरे, बर्तन, अनेक तरह के आभूषण, टेराकोटा आदि शामिल हैं।

सिंधुघाटी–मूर्तिकला ने नागरिक जीवन पर अधिक जोर दिया। विशिष्ट लघु चित्रकारी पर प्रकृतिवाद का प्रभाव है। इनमें परिष्कृत शिल्प–कौशल और रचना की महारत के चिह्न मिलते हैं।

20वीं शताब्दी और उसके बाद की भारतीय समकालीन कला विविध है। इस युग के कलाकार किसी खास शैली और पद्धति तक ही सीमित नहीं रहे।

पाठ 6: मध्यकालीन चित्रकला

विषय

- पंचरक्षा तारा
- जैन ताड़पत्र चित्रकला
- राजस्थानी चित्र

पाठ 7: मुग़ल चित्रकला

विषय

- अकबर काल
- बाज़ के साथ राजकुमार (जहाँगीर काल)
- बारबेट (हिमालय क्षेत्र में पाया जानेवाला नीली गर्दनवाला पक्षी) जहाँगीर काल
- मैडोना का चित्र लिए जहाँगीर

पाठ 8: पहाड़ी चित्रकला

विषय

- कदंब वृक्ष के नीचे, कांगड़ा शैली
- वर्षा : कांगड़ा शैली
- कमल–पुष्प धारण किए कृष्ण की राधा से प्रेमलीला
- दरबारी को संबोधित करते कृष्ण : बसोहली शैली
- विश्वरूप : चंबा शैली

पाठ 9: दक्षिण भारतीय चित्रकला

विषय

- तंजौर चित्रशैली– पंचमुखी आंजनेय
- मैसूर चित्रशैली– मत्स्यावतार
- दक्कनी लघुचित्र– बाज़ द्वारा शिकार करती चाँद बीबी

पाठ 10: कंपनी चित्रशैली

विषय

- भारतीय साधारण चकोर चिड़िया
- बाज़ार का दृश्य
- पालकी

पाठ 11: समकालीन कला एवं कलाकार

विषय

- राजा रवि वर्मा– सुभद्रा हरण
- अवनींद्रनाथ टैगोर– जर्नीस एंड
- जामिनी राय– माँ और बच्चा
- अमृता शेरगिल– दुल्हन का श्रृंगार
- एम.एफ. हुसैन– नाद स्वरम् गणेश्यम्
- के.के. हेब्बार–शीर्षकविहीन

मॉड्यूल 3: रेखांकन और चित्रकला में उपयोग की जाने वाली विधि और सामग्री 8 अंक

प्रस्तावना

यह मॉड्यूल रेखांकन और चित्रकला में उपयोग की जाने वाली सामग्री से संबंधित तकनीक, पद्धतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं की एक श्रृंखला का परिचय देता है। विशिष्ट शब्दावली के परिचय और अभ्यास से व्यावहारिक कार्य की एक निरंतरता लागू होती है। विद्यार्थियों को जानकारी की एक विस्तृत श्रृंखला से जुड़े सैद्धांतिक, भौतिक और सैद्धांतिक मुद्दों की सराहना की क्षमता प्राप्त होगी जो

रेखांकन और चित्रकला के अभ्यास के लिए मौलिक है, जिसमें मिश्रित मीडिया और नई प्रौद्योगिकियों के उपयोग करने की प्रवृत्ति भी शामिल होगी।

पाठ 12: भारतीय कला में फ्रैस्को एवं टेंपरा

विषय

- मरणासन्न राजकुमारी
- राजकुमार और राजकुमारी
- मार विजय
- बैलों की लड़ाई

पाठ 13: सूखे माध्यमों से चित्रण एवं रेखांकन

विषय

- पूजा का चौक
- डोरा मार
- बकरी के साथ लड़की
- रेसकोर्स

पाठ 14: भित्तिचित्र एवं मुद्रण

विषय

- अजंता के भित्तिचित्र- पद्मपाणि बोधिसत्व
- छापाचित्र- लिनोकट
- सब्जियों द्वारा छापाचित्रण
- अँगूठे एवं अँगुलियों द्वारा छापाचित्रण

मॉड्यूल 4: भारत में आदिवासी और लोक कला 6 अंक

प्रस्तावना

आदिवासी और लोककला को ग्रामीण समाज में अभिव्यक्ति का एक अनिवार्य रूप माना जाता है, जिसकी अपनी विभिन्न विशेषताएं है। भारत में जनजातीय और लोककला की एक विशाल शृंखला है जो उनके सामाजिक और धार्मिक विश्वासों के अनुसार प्रत्येक राज्य में शैली भिन्नता होती है। भारत में जनजातीय और लोककला की एक विशाल शृंखला है, जो भिन्न है। भारत के लगभग हर राज्य ने अपनी कला और शिल्प में अपने को विकसित किया है।

पाठ 15: लोक एवं आदिवासी कला

विषय

- वार्ली चित्र- पालघाट देवी का चौक
- पिथोरा चित्र- पिथोरा चित्र
- मधुबनी अथवा मिथिला चित्रकला- कोहबर घर
- कालीघाट चित्रशैली- सीता एवं लव-कुश
- कलमकारी- सीता-स्वयंवर

प्रयोगात्मक 60 अंक

मॉड्यूल 1: प्रकृति और वस्तु का अध्ययन 20 अंक

पाठ 1: पेंसिल और रंगों से प्रकृति-चित्रण

विषय

- प्रकृति चित्रण (3 अभ्यास)

पाठ 2: छाया प्रकाश द्वारा स्थिर वस्तु चित्रण

विषय

- वस्तु : ड्रेपरी के साथ (3 अभ्यास)

पाठ 3: मुखाकृति चित्रण

विषय

- मुखाकृति का अध्ययन
- चेहरे के भाव

मॉड्यूल 2: विभिन्न संरचना, पोस्टर और बनावट का निर्माण 20 अंक

पाठ 4: संयोजन के रचनात्मक रूप

विषय

- मानव के साथ आलंकारिक रचना और जानवर

- परिदृश्य
- ज्यामितीय रूप

पाठ 5: पोस्टर निर्माण

विषय

- वन्यजीवों का संरक्षण – 1 कार्य
- वनों की कटाई – 1 कार्य
- रास्ते पर सुरक्षा – 1 कार्य

पाठ 6: बनावट का निर्माण और छपाई

विषय

- लिनोकट की प्रक्रिया
- स्क्रीन मुद्रण प्रक्रिया
- ब्लॉक प्रिंटिंग

मॉड्यूल 3: कोलाज, ग्राफिक्स और विभिन्न कला रूपों का निर्माण 10 अंक

पाठ 7: कोलाज निर्माण

विषय

- रंगीन कागज के साथ कोलाज बनाना
- फोटो-मोंटाज बनाना
- अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग करके कोलाज निर्माण

पाठ 8: अनुप्रयुक्त कला : ग्राफिक डिजाइन

विषय

- हाथ से ग्रीटिंग कार्ड तैयार करना
- डिजिटल रूप में जन्मदिन कार्ड तैयार करें
- लोगो डिजाइन (मैनुअल और डिजिटल)
- बुक कवर तैयार करना (डिजिटल)

पाठ 9: आदिवासी एवं लोककला के संदर्भ में सृजनात्मक डिजाइन

विषय

- मधुबनी चित्र बनाना
- भील शैली का चित्र बनाना
- कोलम पेंटिंग बनाना

पोर्टफोलियो* **10 अंक**

शिक्षार्थी को कम से कम 20 कार्यों की रेखांकन पुस्तिका (Sketch Book) और 06 कार्यों का एक संग्रह प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है।

'विभिन्न रचनाएं पोस्टर और रेखांकन करना' से संबंधित कार्य **3 अंक**

निम्नलिखित के अनुसार न्यूनतम तीन कार्य प्रस्तुत करना:

- स्लोगन के साथ एक चित्रण; एक पोस्टर (A4 आकार के कागज पर)
- एक अलग माध्यम के साथ एक लैंडस्केप; (A4 आकार के कागज पर)
- मानव और पशु आकृति के साथ एक संरचना; (A4 आकार के कागज पर)

उपयोग की जाने वाली सामग्री : पारंपरिक या स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री, ए4 आकार के कागज, रंग, पेंसिल आदि

स्केच बुक

- **'प्रकृति और वस्तु अध्ययन'** से संबंधित 20 रेखाचित्रों की रेखांकन पुस्तिका

  (काले और सफ़ेद/रंग)

***नोट: सत्र कार्य के रूप में शिक्षार्थी के लिए पोर्टफोलियो प्रस्तुत करना अनिवार्य है।**